स्नातक:हिंदी(प्रतिष्ठा),प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र

16 वीं व्याख्यानमाला

भक्ति-आंदोलन(शेष व्याख्यान)

हिंदी भक्ति काव्य को प्रभावित करनेवाली अनेक साधनात्मक एवं दार्शनिक विचारधाराएं थी, परंतु यह कहा जा सकता है कि ममध्ययुगीन भक्ति आंदोलन पर सबसे अधिक प्रभाव वैष्णव धर्म का पड़ा,क्योंकि यह सबसे अधिक उदार तथा समन्वयशील रूप में आया।हिंदी भक्ति काव्य की राम कृष्ण उपासना धारा के लिए तो निश्चय ही वैष्णव भक्ति आंदोलन पृष्ठभूमि एवं आधार रुप में आया, परंतु निर्गुणोपासक संत एवं सूफ़ी काव्य धाराओं पर भी वैष्णव भक्ति की उदार भावना का प्रभाव पड़ा।कबीर ने तो अन्य संप्रदायों की अपेक्षा वैष्णव भावना की प्रशंसा की है।शास्त्रों के विरोध में अपने भाव प्रकट करते हुए उन्होंने कहा:

चंदन की कुटकी भली, ना बबूल लखरांव।

वैष्णव की छपरी भली, ना सांकत को गांव।।

मध्ययुगीन संत काव्य धारा का संबंध विचार एवं शैली परंपरा की दृष्टि से सिद्धो एवं नाथों से जुड़ता है।गोरखनाथ की योग साधना संबधी शब्दावली कबीर और उनके अनुयायी संतों की बानियों तथा मराठी संतों की शब्दावली में देखी जा सकती है।इस साधनात्मक काव्य धारा में कबीर ने वैष्णव भक्ति भावना का समावेश कर दिया। शिव भक्ति की उपासना नाथ मत का साध्य है। कबीर के आराध्य राम है।राम अवतारी नहीं वरन निर्गुण निराकार परब्रह्म है। नाथ संप्रदाय की हठयोग साधना कुंडलिनी जागरण आदि की क्रियाएं बड़ी जटिल है। कबीर ने उन्हें सहज रूप में प्रतिपादित किया है। उनकी सहज समाधि,उच्च सात्विक एवं संयमी जीवन का सहज जीवन रूप है, अतः उनकी भक्ति,सिद्धि के रूप में उतनी नहीं,जितनी की जीवन का क्रम बन कर आई है।

जिस प्रकार सिद्धनाथ साधना की परंपरा का प्रभाव संत काव्य पर है,उसी प्रकार सूफी साधना का भी। सूफी मत का प्रचार भारतवर्ष में 15 वी शताब्दी से ही जोरों पर था। अनेक सूफी संप्रदाय चल रहे थे और समकालीन जीवन की चेतना और आवश्यकता के अनुसार अपना प्रचार भी कर रहे थे। उस सूफी साधना से संबंधित हिंदी साहित्य की एक विशेष धारा भक्ति युग में प्रारंभ हुई और वह पूरे मध्यकाल अर्थात भक्ति एवं रीति युगों में बराबर चलती रही। यह काव्य धारा के नाम से प्रसिद्ध है। इस पर भी हठ योग की साधना पद्धति, तंत्र एवं

नाथ संप्रदाय का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। अनेक कवियों की शब्दावली में सूफी शब्दावली के साथ-साथ प्रतीक रूप में नाथ साधना की शब्दावली भी प्रयुक्त की गई है। इस साहित्य में भी संयम,साधना,स्वच्छ,पवित्र जीवन, गुरु एवं प्रेम अनुभूति को महत्व प्रदान किया गया है,अतः अनेक रूपों में यह भी निर्गुण उपासना की साधनात्मक पृष्ठभूमि पर विकसित हुई,जिससे संत काव्य एवं सूफी प्रेमाख्यान काव्य निर्गुण उपासक काव्य धारा के अंतर्गत रखे जाते हैं।क्रमशः